ओं श्री गणेशाय नमो नमः

१. ओं शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥

२. अभिप्रेतार्थ-सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैर् अपि।
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै श्री गणाधिपतये नमः॥

३. गुरुर् ब्रह्मा गुरुर् विष्णु गुरु साक्षात् महेश्वरः।
गुरुर् एव जगत् स्र्वं तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

४. अखण्ड-मण्डलाकरं व्याप्तं येन चारचरम्।
तत् पदं दर्शितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

५. अज्ञान-तिमिरान्धस्य ज्ञानांजन-शलाकया।
चक्षुर् उन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

६. नमामि सद्गुरुं शान्तं प्रत्यक्षं शिव-रुपिणम्।
शिरसा योग-पीठस्थं धर्मकामार्थ-सिद्धये॥

श्री गुरु स्तुतिः

ओं

१. नारायणात्मजं शान्तं हारमाल्योदरोद्भवम्।
भक्तानां रक्षकं धीरं गोपीनाथं नमाम्यहम्॥

२. ब्राह्मणं ब्रह्म-तत्त्वज्ञं जन-सन्मार्ग-दर्शकम्।
निष्काम-कर्मिणं सन्तं गोपीनाथं नमाम्यहम्॥

३. अहर् निशं भक्ति-योग प्राप्त-शंकर-दर्शनम्।
अजपाजप-संलग्नं गोपीनाथं नमाम्यहम्॥

४. जितेन्द्रियं जिताहारं सम-लोष्टाश्म-कांचनम्।
मायातीतं महात्मानं गोपीनाथं नमाम्यहम्॥

५. देह-स्नान-विनिर्मुक्तं मनः स्नान-परायणम्।
सदात्मशुद्धि-संयुक्तं गोपीनाथं नमाम्यहम्॥

६. ईश-कृपाप्त-विज्ञानं-अष्ट-सिद्धयनुगं-मुनिम्।
भक्त-दत्त-नव-निधिं गोपीनाथं नमाम्यहम्॥

७. गृहस्थं अपि संन्यास-व्रतिनं ब्रह्मचारिणम्।
त्रिकालज्ञं गुणातीतं गोपीनाथं नमाम्यहम्॥

८. सिद्धासन-स्थितं नित्यं प्रभुध्यान-रतं बुधम्।
परमेश्वर-संलीनं गोपीनाथं नमाम्यहम्॥

९. ज्ञान-गंगा-जल स्नान-धौत-मानस-किल्विषम्।
विज्ञानानिनां अग्रगण्यं गोपीनाथं नमाम्यहम्॥

१०. स्व-कर-स्पर्श-सद्भक्त-भव-भीति-विनाशकम्।
सर्व-जन-हिते-रतं गोपीनाथं नमाम्यहम्॥

११. दृष्टि-पातेन दुःखिनां रक्षितारं कृपा-निधिम्।
दुःखिभ्यः सुख-दातारं गोपीनाथं नमाम्यहम्॥

१२. यज्ञ-भस्म-भक्त रोग-हर्तारं शुद्ध-चेतसम्।
रोग-नाश करं वैद्यं गोपीनाथं नमाम्यहम्॥

१३. देश-संकट-काले यः कृतवान् लोक-रक्षणम्।
तं देश-रक्षकं वीरं गोपीनाथं नमाम्यहम्॥

१४. राक्षसानां विनाशाय सैनिकाः येन प्रेरिताः।
सेनाध्व-दर्शकं शूरं गोपीनाथं नमाम्यहम्॥

१५. पवित्रे स्वाश्रमे संस्थं भक्तानां काम-पूरकम्।
अवधूत दशापन्नं गोपीनाथं नमाम्यहम्॥

१६. काव्य-पुष्पमयी पूजा गोपीनाथस्य पादयोः।
कृता त्रिभुवनाख्येन शास्त्रिणा कृष्ण-सूनना॥

बबॅ भगवान हरे

१. ऊं बबॅ भगवानॅ हरे, जय जय बबॅ भगवानॅ हरे;
पिता, बबॅ भगवानॅ हरे।
भक्ति-भाव भक्त्यन पनॅन्यन, दासॅ-भाव दासन पनॅन्यन;
प्रथ विज़ि कर सॉ अनुग्रह, जय जय बबॅ भगवानॅ हरे॥

२. कीर्तन युस सॉ करि पज़ि मनॅ, छ्यनॅ गछि मोहॅ-ज़ालॅ
निशः बबा, छ्यनॅ गछि मोहॅ ज़ालॅ निश।
क्षनॅसॅय मंज़ मूख्य सुय बनि, क्षनॅसॅय मंज़ मूख्य सुय बनि
नाव तुहन्दुय युस स्वरे॥ जय जय०

३. मोल मॉज्य सोनुय छुवुँ सॉ तोह्य, आयॅ अस्यॅ त्वहि
शरॅणॅय बबा, आयॅ अॅस्य त्वहि शरॅणॅय।
परॅनॅय पनॅन्यन तल रछ, पादन पनॅन्यन तल रछ;
असि संकटें नि गरे॥ जय जय०

४. आवागमन चठ सॉ सोनुय, तुहन्दुय छु मनि मज़ लोल;
बबा, तुहन्दुय छु मनि मंज़ लोल।
होल गोमुत छु असि सद्ग्वरॅ, होल गोमुत छु असि टाठि
ग्वरॅः तुहुन्द दूर्यर कुस ज़रे? जय जय०

५. पूरॅ यूगॅच सुमरण फिरान, नूरॅ-बोरमुत छु नुन्दें बोन;
बबा, नूरॅ-बोरॅमुत छु नुन्दें बोन।
सूर तुहुन्ज़ि दोनि हुन्द छु औषध, सूर तुहुन्ज़ि दोनि हुन्द
छु औषध; बनि यस मा सुर मरे॥ जय जय ०

६. सासें सिरियुक ह्युह छुवु बजर, आसॅवुन्य अजर अमर तो
'हय; बबा, आसुॅवुन अजर अमर तो'ह्य।
भास मनि मंज़ प्रत्यक्ष असि वोञ, भास मनि मंज़ प्रत्यक्ष
असि वोञः पोश लागोय लोलरे॥ जय जय०

७. यस दया आसि तुहुन्ज़य बबा, पोरि कति तस यमॅदूत?
बबा, पोरि कति तस यमॅदूत?
भूत, प्रीत, तसॅरुफ इत्यादिक, भूत, प्रीत, तसॅरुफ
इत्यादिक;
सॉरिय गछन बांबरे॥ जय जय ०

८. रोज़ि अमर सुति बेशक, यस कल्याण बनि तुहुन्दुय;
बबा, यस कल्याण बनि तुहुन्दुय।
तुहुन्दि प्रभावॅ तस ब्रोंठॅ कनि, तुहुन्दि प्रतापॅ तस ब्रोंठॅ
कनि;
वुछॅतॅ, अदॅ कांह मा दरे ॥ जय जय ०

९. पाप-शाप असि पॉपियन गाल, वाल पृथ्वी प्यठॅ बोर;
बबा, वाल पृथ्वी प्यठॅ बोर।
मॉर्य संसाररॅक्यव व्यशियव, मॉर्य संसारॅ क्यव व्यशियव;
ह्रदयस मंज़ असि बेह॥ जय जय०

१०. शूलहरॅ, यूगीश्वरॅ, सन्तॅ, सोन भविनय सॉ जय-जयकार;
बबा, सोन भविनय सॉ जय-जयकार।
वीलॅ-ज़ॉरी बोज़ सन्मोंख, वीलॅ-जॉरी बोज़ सन्मोंख;
रोज़ सन्त्वष्ट गरि गरे॥ जय जय ०

११. गोपीनाथ-आश्रम तुहुन्द, वैखुरीयारॅ शोलॅ मारान;
बबा, वैखुरीयारॅ शोलॅ मारान।
प्रारान भखॅत्य दर्शनस अॅस्य, प्रारान भखॅत्य दर्शनस;
अस्य बय हा पादन तल वरे॥ जय जय०

१२. दीवानॅ मसरुर दासव, मंज़ॅ दासा अख तुहुन्द;
बबा, बुॅति दासा अख तुहुन्द।
मोन भवॅसरॅ तरि सुय युस, मोन भवॅसरॅ तरि सुय,
युस आरती तुहुन्ज़ न्यथ करे ॥ जय जय ०

१३. बवॅ भगॅवानॅ हरे, जय जय बवॅ भगॅवानॅ हरे;
पिता, बवॅ भगॅवानॅ हरे।
भक्ति-भाव भखॅत्यन पनॅन्यन, दासॅ-भाव दासन पनॅन्यन;
प्रथ विजि कर सॉ अनुग्रह, जय जय बवॅ भगॅवानॅ हरे॥

शान्ति-पाठ

असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर् गमय।
मृत्योर् मा अमृतं गमय।
ओं पूर्णम् अदः, पूर्णम् इदं, पूर्णात् पूर्णम् उदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णम्-आदाय, पूर्णम् एवावशिष्यते॥
ओं शान्तिः शान्तिः शान्तिः ओं
२ मिनट के लिए भगवान जी के ध्यान मे
मौन तथा भगवान जी के नाम का जाप
ओं ओं ओं
ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
ओं नमो भगवते गोपीनाथाय
ओं नमो भगवते गोपीनाथाय

भावॅ सान लोला

१. भावॅ सान लोला भरव सद्-ग्वरॅसॅय,
भगवान बवॅसॅय करव प्रणाम।
भावॅ सान लोला भरव सद्-ग्वरॅसय,
भगवान बबसॅय करव प्रणाम॥

२. ज़न्मा दोर तम्य हारॅ जूनॅ-पछिसॅय,
त्यथ ऑस बाह व्ययि भार्गववार।
१८९८ ईस्वी सनॅ-सॅय,
भगवान बवॅसॅय करव प्रणाम॥

३. हारॅमाल माता आयि वोलॅसनॅसॅय,
नाराण-बवॅनॅय बोर क्याह लोल।
मान तॅम्य कॅरॅनय सूॅत्य सिद्धार्थसॅय,
भगवान बवॅसय करव प्रणाम॥

४. बालॅक्रीड़ा कॅरॅन मंज़ भानॅमहलॅसॅय,
घरॅसॅय मंज़ तस ओस वैराग।
त्यॉगिथ सोरुय छाँडॉन शिवॅसॅय,
तस त्यागॅ-शीलसॅय कॅरव प्रणाम॥

५. जायि जायि छॉडान ओस सद्-ग्वरॅसॅय,
कर दियम दर्शुन? बन्यम अनुग्रह।
अभिलाष पूरॅ गव तस साधु-शीलॅसॅय,
तस निष्कामॅसॅय करव प्रणाम॥

६. साफा बबस आस प्यठ मस्तकॅसॅय,
तनि प्यठ फ्यरॅना ओस शूभान।

सोऽहं सोऽहं बबस ओस मनॅसॅय,
तस स्थिॅर-मनॅसॅय करव प्रणाम ॥

७. दोहन तॅ रॉचन लॅगिथ वोपॅवासॅसॅय,
केवल चिलिमा ऑस ज़ोतान।
ॐ शब्दॅ मोहॅरा बबस ऑस मनॅसॅय,
तस अवधूतॅसॅय करव प्रणाम ॥

८. शवद्धॅ-मनॅ भक्ति-भावॅ लगान यज्ञॅसॅय,
धून्या ब्रोंठॅकनि शोलॅ मारान।
दिवॅताह ति प्रारान हवनॅ-बॉम्यसॅय,
तस यागॅ-शीलॅसॅय करव प्रणाम ॥

९. आव येलि संकठ कश्यपॅ-प्रान्तॅसॅय,
योगअग्नि सूॅत्यन तथ कोरुन ग्रास।
अद्वैत ऑसिथ लॅगिथ कर्म-योगॅसॅय,
योगाभ्यॉसिसॅय करव प्रणाम ॥

१०. खबरा न्यबर गयि कश्मीर-प्रान्तॅसॅय,
गोपी-भगवान गयॅन्यर्वाण।
न्यर्लूभ, निष्काम, सायंकालॅसॅय;
ध्यानीश्वरॅसॅय करव प्रणाम ॥

११. ज़्येठॅ द्वयि भोमॅवारि जूनयपछिसॅय,
मृगशर निशतुर ओस चमॅकान।
१९६८ ईस्वी सनॅसॅय,
निर्वाण-शीलसॅय करव प्रणाम ॥

१२. भखॅत्य आय लारान तोत दर्शनॅसॅय,
अशि कनि मोख्तय आस्यॅ हारान।
आरती लोलॅ सान कॅरॅख यूगीश्वरॅसॅय,
ब्रह्म-स्वरूपसॅय करव प्रणाम ॥

१३. क्याह करन कर्म तस कर्मातीतसॅय,
हृदयस मंज़ यस ओस सोऽहम्?
जूत्य गॉयि मीलिथ ज्योति-स्वरूपॅसॅय,
जीवनम्वक्तॅसॅयि करव प्रणाम ॥

१४. कति आस्यॅ धनॅ तॅ द्यार तस निर्लोभसॅयि?
लक्ष्मी ब्रोंठॅकनि करान तस वास।
कर कर्यम कृपा दियम म्य दानॅसुॅय,
तस दानॅशीलसॅय करव प्रणाम ॥

१५. पीठा वुछक्यनस तस पीठीश्वरॅसॅय,
वैखुरी-यारय क्याह शूबान।
कृपा बबॅसॅन्ज़ विश्व-मंडलॅसॅय,
भगवत्‌रुपसॅय करव प्रणाम ॥

१६. वर्णन क्याह करव तस गुणातीतसॅय?
युस ओस न्यर्लोभ ब्यथि न्यर्गुण।
नमो नमः बबॅसॉन्दिस गुरुय तपॅसॅय,
कर्मातीतसॅयकरव प्रणाम ॥

१७. म्वरॅ सॅन्ज़ अस्तुती स्वरि युस मनॅसॅय,
तस कति पोरियि कॉसि हुन्द भय?
कॅहन सॉ तॉर छ्य तस म्वकॅलनॅसॅय,
भगवान बबॅसॅय करव प्रणाम ॥
भावॅ सान लोला भरव सद्‌गवॅरसॅय,
भगवान बबॅसॅय करव प्रणाम ॥

गुरु वन्दना

१. जय दक्षिणा-मूर्ति, ओं गुरु जय दक्षिणा-मूर्ति।
करत अनुग्रह शिष्यवर्ग पर, करत अनुग्रह दासवर्ग पर;
फैली जग कीर्ति॥ हरि ओं जय दक्षिणामूर्ति॥

२. दृष्टिपात, संकल्प-मात्र से, जगती कुण्डलिनी,
स्वामी, जगती कुण्डलिनी॥
क्रियावती क्रीडाएँ करती, क्रियावती क्रीडाएँ करती;
जायें न जो बरनी॥ हरि ओं जय दक्षिणा मूर्ति॥

३. षट्चक्रों को वेध, उर्ध्व-गति प्राणों की होती,
स्वामी, प्राणों की होती।
दिव्य-मौन उपदेश जगाता, दिव्य मौन उपदेश जगाता;
निष्ठा की ज्योति॥ हरि ओं जय दक्षिणा मूर्ति॥

४. निर्मल मन, निष्काम-भाव से शक्ति को ध्यावे;
स्वामी शक्ति को ध्यावे।
बह्मधाम कर प्राप्त, बह्मधाम कर प्राप्त;
छूट भव-बन्धन से जावे॥ हरि ओं जय दक्षिणा मूर्ति॥

५. करिये कृपा गुरुदेव दास को अटल-भक्ति दीजे,
स्वामी, अटल भक्ति दीजे।
भुक्ति-मुक्ति कर दान दीन को, भुक्ति-मुक्ति कर दान
दीन को, पूर्ण काम-कीजे॥ हरि ओं जय दक्षिणा मूर्ति॥

६. प्रतिपल प्रीति बढ़े चरणों में, हो न कमी तृप्ति,
स्वामी, हो न कभी तृप्ति।
सात्त्विक भाव बढ़े क्षण में, सात्त्विक भाव बढें क्षण
क्षण में; बढ़े ज्ञान-दीप्ति॥ हरि ओं जय दक्षिणा मूर्ति॥

७. जिनके दृढ-विश्वास चरण तजि, आस नहीं दूजी,
स्वामी, आस नहीं दूजी।
निश्चय बनि अधिकारी, निश्चय बनि अधिकारी;
पावे महा-योग-पूंजी॥हरि ओं जय दक्षिणा मूर्ति॥

८. गुरुपद पद्म-पराग-सुअंजन, जो नयनन आंजे,
स्वामी, जो नयनन आंजे।
दिव्य-दृष्टि कर प्राप्त, दिव्य दृष्टि कर प्राप्त;
तापत्रय अर्धनिमिष भांजे॥ हरि ओं जय दक्षिणा मूर्ति॥

९. कैसे करें प्रार्थना, गुरुवर? हम सब अज्ञानी,
स्वामी, हम सब अज्ञानी।
स्वयंसिद्ध-शुभ-साधन दीजे,
स्वयंसिद्ध-शुभ-साधन दीजे,
श्री गुरु विज्ञानी॥ हरि ओं जय दक्षिणा मूर्ति॥

१०. जय दक्षिणा मूर्ति, ओं गुरु जय दक्षिणा मूर्ति।
करत अनुग्रह शिष्यवर्ग पर, करत अनुग्रह दासवर्ग पर;
फैली जग कीर्ति॥ हरि ओं जय दक्षिणा मूर्ति॥

महा मन्त्र

१. 'ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय'
युस हा परि तस हा लगि भवॅसरॅ तार।

२. 'ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय'
युस हा परि तस हा लगि भवॅसरॅ तार।

३. 'ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय'
युस हा परि तस हा लगि भवॅसरॅ तार।

४. 'ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय'
युस हा परि तस हा लगि भवॅसरॅ तार।

५. 'ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय'
युस हा परि तस हा लगि भवॅसरॅ तार।

६. 'ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय'
युस हा परि तस हा लगि भवॅसरॅ तार।

७. 'ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय'
युस हा परि तस हा लगि भवॅसरॅ तार।

८. 'ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय'
युस हा परि तस हा लगि भवॅसरॅ तार।

९. 'ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय'
युस हा परि तस हा लगि भवॅसरॅ तार।

१०. 'ॐ नमो भगवते गोपीनाथाय'
युस हा परि तस हा लगि भवॅसरॅ तार।

प्रार्थना

कठिनिस सॅंदरस तार दिनॅ खॉतरॅ
सद्‌ग्वरॅ तोह्य छिव ज़गि मशहूर।
अज्ञानॅ–मलॅकव नाव सॉन्य गीरॅमॅच,
ज़गद्‌ग्वरुॅ सॉन्य नाव तार सॉ अपोर॥

कठिनिस सॅंदरस तार दिनॅ खॉतरॅ
सद्‌ग्वरॅ तोह्य छिव ज़गि मशहूर।
अज्ञानॅ–मलॅकव नाव सॉन्य गीरॅमॅच,
ज़गद्‌ग्वरुॅ सॉन्य नाव तार सॉ अपोर॥

कठिनिस सॅंदरस तार दिनॅ खॉतरॅ
सद्‌ग्वरॅ तोह्य छिव ज़गि मशहूर।
अज्ञानॅ–मलॅकव नाव सॉन्य गीरॅमॅच,
ज़गद्‌ग्वरुॅ सॉन्य नाव तार सॉ अपोर॥

बोल सद्‌गुरु महाराज की जय।
बोल जगधगुरु भगवान गोपीनाथ महाराज की जय॥
बोल सांचे दरबार की जय॥
ॐ नमः पार्वती–पतये
हर हर महादेव॥